



Sourabh Yadav

30 Dec 1988

12:35 AM

Bhopal

Model: Web-MyKundli

Order No: 121657101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 29-30/12/1988
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 00:35:00 घंटे
इष्ट _____: 43:55:11 घटी
स्थान _____: Bhopal
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:17:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:28:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:20:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 00:14:52 घंटे
वेलान्तर _____: -00:02:06 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:48:40 घंटे
सूर्योदय _____: 07:00:55 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:43:44 घंटे
दिनमान _____: 10:42:48 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 14:35:50 धनु
लग्न के अंश _____: 17:27:30 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: उ०फाल्गुनी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: सूर्य
योग _____: सौभाग्य
करण _____: विष्टि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: टे-टेकचंद
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

| कैलेंडर | वर्ष | मास | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|------------|----------------|
| राष्ट्रीय | शक : 1910 | पौष | 9 |
| पंजाबी | संवत : 2045 | पौष | 16 |
| बंगाली | सन् : 1395 | पौष | 15 |
| तमिल | संवत : 2045 | मार्गडी | 16 |
| केरल | कोल्लम : 1164 | धनु | 15 |
| नेपाली | संवत : 2045 | पौष | 16 |
| चैत्रादि | संवत : 2045 | पौष | कृष्ण 7 |
| कार्तिकादि | संवत : 2045 | मार्गशीर्ष | कृष्ण 7 |

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 6
तिथि समाप्ति काल _____ : 18:23:32
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०फाल्गुनी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:04:04 घंटे
जन्म योग _____ : उ०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : आयुष्मान
योग समाप्ति काल _____ : 17:08:29 घंटे
जन्म योग _____ : सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 18:23:32 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 13:47:20
भभोग _____ : 67:48:44
भोग्य दशा काल _____ : सूर्य 4 वर्ष 9 मा 10 दि

घात चक्र

मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : मकर
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

Shri Dadaji Jyotish Kendra

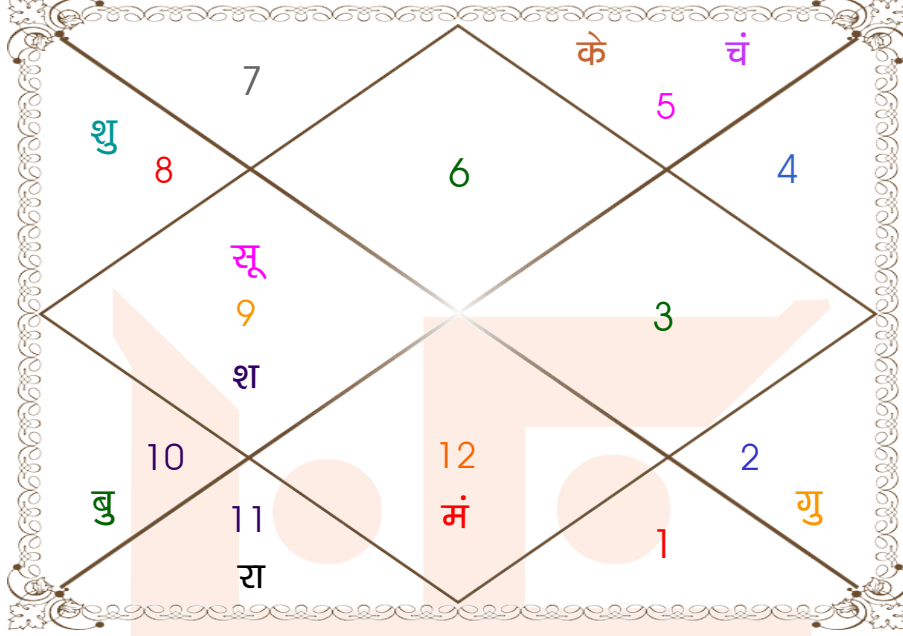
Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

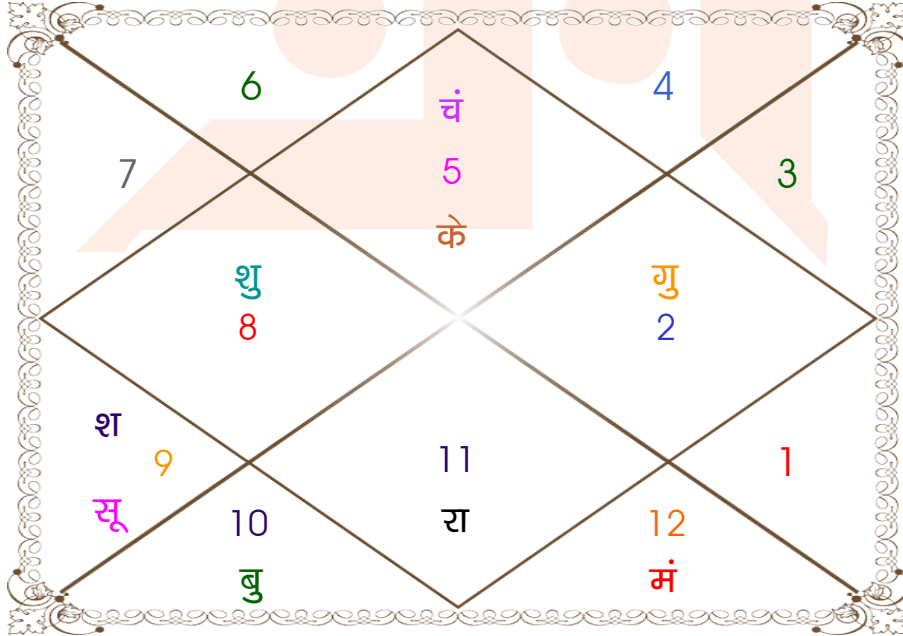
dadajijyotishkendra@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

| | | | |
|---------|----|----|----------|
| मं | | गु | |
| रा | | | |
| बु | | | के चं |
| श सू | शु | | ल |

लग्न कुण्डली

| | | | |
|----------|---|----|---------|
| गु | | मं | |
| | | रा | |
| | | बु | |
| चं के | ल | | सू श |

विंशोत्तरी
सूर्य 4वर्ष 9मा 10दि
सूर्य

30/12/1988

12/10/2107

| | |
|--------|------------|
| सूर्य | 10/10/1993 |
| चन्द्र | 11/10/2003 |
| मंगल | 10/10/2010 |
| राहु | 10/10/2028 |
| गुरु | 10/10/2044 |
| शनि | 11/10/2063 |
| बुध | 10/10/2080 |
| केतु | 11/10/2087 |
| शुक्र | 12/10/2107 |

योगिनी

सिद्धा 5वर्ष 6मा 27दि
सिद्धा

28/07/2023

28/07/2030

| | |
|---------|------------|
| सिद्धा | 07/12/2024 |
| संकटा | 28/06/2026 |
| मंगला | 07/09/2026 |
| पिंगला | 27/01/2027 |
| धान्या | 28/08/2027 |
| भामरी | 07/06/2028 |
| भद्रिका | 28/05/2029 |
| उल्का | 28/07/2030 |

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

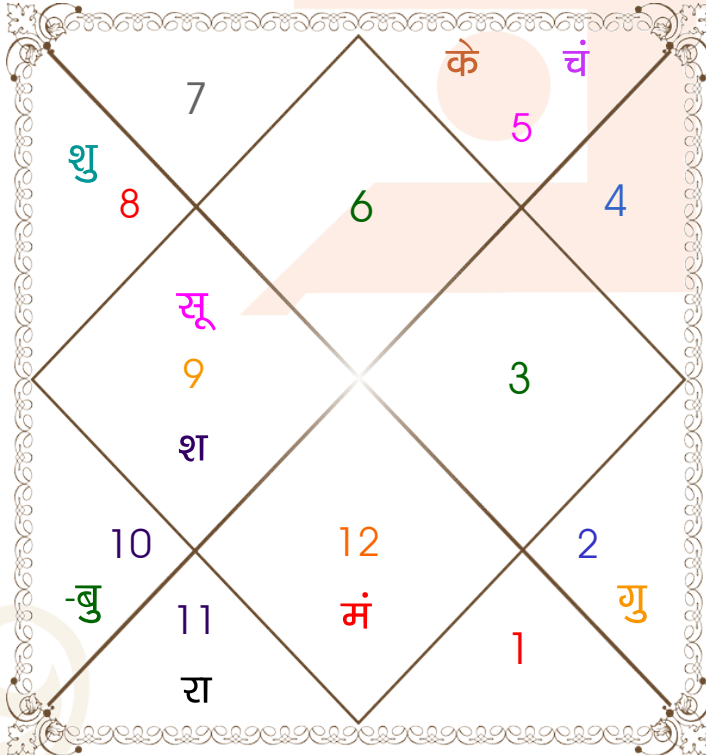
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---------|---|---|--------|----------|-----------|-------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न | | | कन्या | 17:27:30 | 330:23:26 | हस्त | 3 | 13 | बुध | चंद्र | शनि | --- |
| सूर्य | | | धनु | 14:35:50 | 01:01:09 | पूर्वाषाढ़ा | 1 | 20 | गुरु | शुक्र | शुक्र | मित्र राशि |
| चंद्र | | | सिंह | 29:22:44 | 11:47:52 | उ०फाल्गुनी | 1 | 12 | सूर्य | सूर्य | राहु | मित्र राशि |
| मंगल | | | मीन | 25:23:05 | 00:30:05 | रेवती | 3 | 27 | गुरु | बुध | राहु | मित्र राशि |
| बुध | | | मक | 00:19:42 | 01:31:33 | उत्तराषाढ़ा | 2 | 21 | शनि | सूर्य | राहु | सम राशि |
| गुरु | व | | वृष | 03:10:23 | 00:04:19 | कृतिका | 2 | 3 | शुक्र | सूर्य | शनि | शत्रु राशि |
| शुक्र | | | वृश्चि | 21:19:58 | 01:14:59 | ज्येष्ठा | 2 | 18 | मंगल | बुध | शुक्र | सम राशि |
| शनि | | अ | धनु | 11:37:39 | 00:07:06 | मूल | 4 | 19 | गुरु | केतु | बुध | सम राशि |
| राहु | | | कुंभ | 12:53:50 | 00:00:56 | शतभिषा | 2 | 24 | शनि | राहु | बुध | मित्र राशि |
| केतु | | | सिंह | 12:53:50 | 00:00:56 | मघा | 4 | 10 | सूर्य | केतु | बुध | शत्रु राशि |
| हर्ष | | | धनु | 07:54:59 | 00:03:36 | मूल | 3 | 19 | गुरु | केतु | गुरु | --- |
| नेप | | | धनु | 16:07:59 | 00:02:16 | पूर्वाषाढ़ा | 1 | 20 | गुरु | शुक्र | सूर्य | --- |
| प्लूटो | | | तुला | 20:47:31 | 00:01:38 | विशाखा | 1 | 16 | शुक्र | गुरु | गुरु | --- |
| दशम भाव | | | मिथु | 17:29:04 | -- | आर्द्रा | -- | 6 | बुध | राहु | सूर्य | -- |

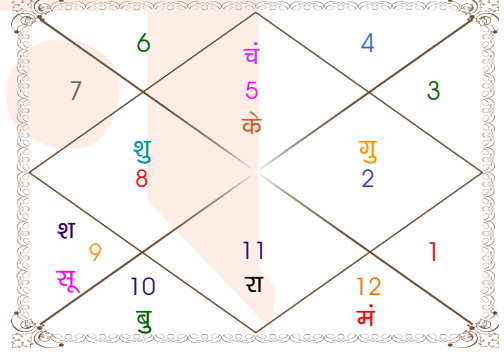
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:42:19

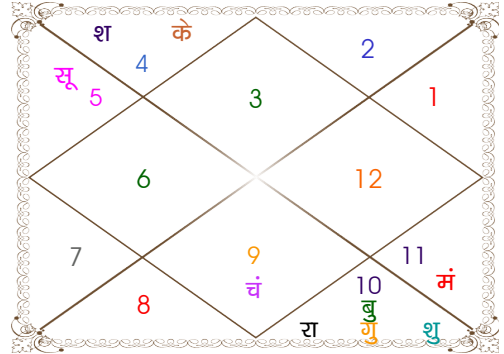
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

| भाव | भाव संधि | भाव मध्य |
|-----|------------------|------------------|
| 1 | कन्या 02:27:45 | कन्या 17:27:30 |
| 2 | तुला 02:27:45 | तुला 17:28:01 |
| 3 | वृश्चिक 02:28:17 | वृश्चिक 17:28:32 |
| 4 | धनु 02:28:48 | धनु 17:29:04 |
| 5 | मकर 02:28:48 | मकर 17:28:32 |
| 6 | कुम्भ 02:28:17 | कुम्भ 17:28:01 |
| 7 | मीन 02:27:45 | मीन 17:27:30 |
| 8 | मेष 02:27:45 | मेष 17:28:01 |
| 9 | वृष 02:28:17 | वृष 17:28:32 |
| 10 | मिथुन 02:28:48 | मिथुन 17:29:04 |
| 11 | कर्क 02:28:48 | कर्क 17:28:32 |
| 12 | सिंह 02:28:17 | सिंह 17:28:01 |

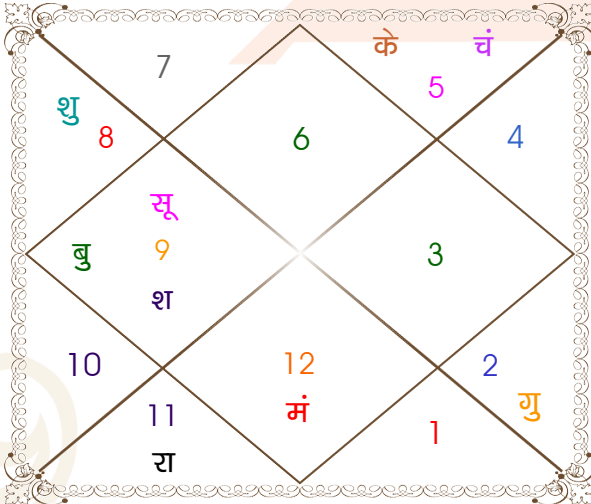
निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|-----|---------|----------|
| 1 | कन्या | 17:27:30 |
| 2 | तुला | 16:29:54 |
| 3 | वृश्चिक | 16:43:55 |
| 4 | धनु | 17:29:04 |
| 5 | मकर | 18:32:20 |
| 6 | कुम्भ | 19:03:58 |
| 7 | मीन | 17:27:30 |
| 8 | मेष | 16:29:54 |
| 9 | वृष | 16:43:55 |
| 10 | मिथुन | 17:29:04 |
| 11 | कर्क | 18:32:20 |
| 12 | सिंह | 19:03:58 |

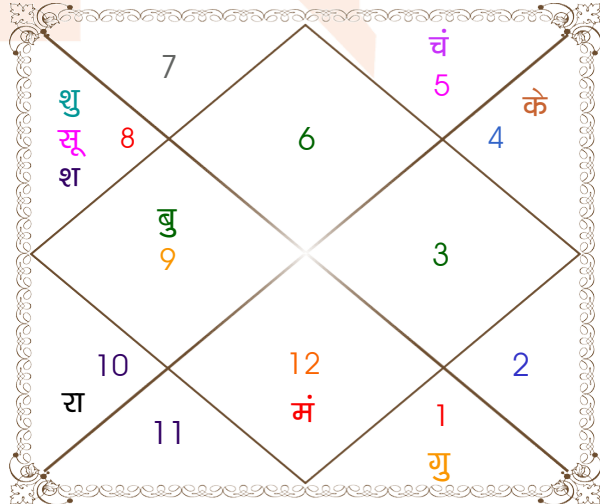
तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|-----------------|--------|---------|---------|------------|-----------|---------|------------|-------------|
| उ०फाल्गुनी हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पूर्वाषाढा | |
| उत्तराषाढा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती | अश्विनी | भरणी |
| कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू०फाल्गुनी |

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 4 वर्ष 9 मास 10 दिन

| सूर्य 6 वर्ष | चंद्र 10 वर्ष | मंगल 7 वर्ष | राहु 18 वर्ष | गुरु 16 वर्ष |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 30/12/1988 | 10/10/1993 | 11/10/2003 | 10/10/2010 | 10/10/2028 |
| 10/10/1993 | 11/10/2003 | 10/10/2010 | 10/10/2028 | 10/10/2044 |
| 00/00/0000 | चंद्र 11/08/1994 | मंगल 08/03/2004 | राहु 23/06/2013 | गुरु 28/11/2030 |
| 00/00/0000 | मंगल 12/03/1995 | राहु 26/03/2005 | गुरु 16/11/2015 | शनि 10/06/2033 |
| 30/12/1988 | राहु 10/09/1996 | गुरु 02/03/2006 | शनि 22/09/2018 | बुध 16/09/2035 |
| राहु 28/10/1989 | गुरु 10/01/1998 | शनि 11/04/2007 | बुध 11/04/2021 | केतु 22/08/2036 |
| गुरु 17/08/1990 | शनि 11/08/1999 | बुध 07/04/2008 | केतु 29/04/2022 | शुक्र 23/04/2039 |
| शनि 30/07/1991 | बुध 09/01/2001 | केतु 03/09/2008 | शुक्र 29/04/2025 | सूर्य 09/02/2040 |
| बुध 04/06/1992 | केतु 10/08/2001 | शुक्र 04/11/2009 | सूर्य 24/03/2026 | चंद्र 10/06/2041 |
| केतु 10/10/1992 | शुक्र 11/04/2003 | सूर्य 11/03/2010 | चंद्र 22/09/2027 | मंगल 17/05/2042 |
| शुक्र 10/10/1993 | सूर्य 11/10/2003 | चंद्र 10/10/2010 | मंगल 10/10/2028 | राहु 10/10/2044 |

| शनि 19 वर्ष | बुध 17 वर्ष | केतु 7 वर्ष | शुक्र 20 वर्ष | सूर्य 6 वर्ष |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 10/10/2044 | 11/10/2063 | 10/10/2080 | 11/10/2087 | 12/10/2107 |
| 11/10/2063 | 10/10/2080 | 11/10/2087 | 12/10/2107 | 00/00/0000 |
| शनि 14/10/2047 | बुध 08/03/2066 | केतु 08/03/2081 | शुक्र 09/02/2091 | सूर्य 29/01/2108 |
| बुध 23/06/2050 | केतु 06/03/2067 | शुक्र 08/05/2082 | सूर्य 09/02/2092 | चंद्र 30/07/2108 |
| केतु 02/08/2051 | शुक्र 03/01/2070 | सूर्य 13/09/2082 | चंद्र 10/10/2093 | मंगल 05/12/2108 |
| शुक्र 01/10/2054 | सूर्य 10/11/2070 | चंद्र 14/04/2083 | मंगल 10/12/2094 | राहु 31/12/2108 |
| सूर्य 13/09/2055 | चंद्र 10/04/2072 | मंगल 10/09/2083 | राहु 10/12/2097 | 00/00/0000 |
| चंद्र 14/04/2057 | मंगल 08/04/2073 | राहु 28/09/2084 | गुरु 11/08/2100 | 00/00/0000 |
| मंगल 23/05/2058 | राहु 26/10/2075 | गुरु 04/09/2085 | शनि 12/10/2103 | 00/00/0000 |
| राहु 29/03/2061 | गुरु 31/01/2078 | शनि 14/10/2086 | बुध 12/08/2106 | 00/00/0000 |
| गुरु 11/10/2063 | शनि 10/10/2080 | बुध 11/10/2087 | केतु 12/10/2107 | 00/00/0000 |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 4 वर्ष 9 मा 11 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| | | | | |
|--|--|--|--|--|
| राहु - सूर्य 29/04/2025 24/03/2026 | राहु - चंद्र 24/03/2026 22/09/2027 | राहु - मंगल 22/09/2027 10/10/2028 | गुरु - गुरु 10/10/2028 28/11/2030 | गुरु - शनि 28/11/2030 10/06/2033 |
| सूर्य 15/05/2025 चंद्र 12/06/2025 मंगल 01/07/2025 राहु 19/08/2025 गुरु 02/10/2025 शनि 23/11/2025 बुध 09/01/2026 केतु 28/01/2026 शुक्र 24/03/2026 | चंद्र 08/05/2026 मंगल 09/06/2026 राहु 30/08/2026 गुरु 11/11/2026 शनि 06/02/2027 बुध 25/04/2027 केतु 27/05/2027 शुक्र 26/08/2027 सूर्य 22/09/2027 | मंगल 15/10/2027 राहु 11/12/2027 गुरु 01/02/2028 शनि 01/04/2028 बुध 26/05/2028 केतु 17/06/2028 शुक्र 20/08/2028 सूर्य 08/09/2028 चंद्र 10/10/2028 | गुरु 22/01/2029 शनि 25/05/2029 बुध 13/09/2029 केतु 28/10/2029 शुक्र 07/03/2030 सूर्य 15/04/2030 चंद्र 19/06/2030 मंगल 03/08/2030 राहु 28/11/2030 | शनि 24/04/2031 बुध 02/09/2031 केतु 26/10/2031 शुक्र 28/03/2032 सूर्य 13/05/2032 चंद्र 29/07/2032 मंगल 21/09/2032 राहु 07/02/2033 गुरु 10/06/2033 |
| गुरु - बुध 10/06/2033 16/09/2035 | गुरु - केतु 16/09/2035 22/08/2036 | गुरु - शुक्र 22/08/2036 23/04/2039 | गुरु - सूर्य 23/04/2039 09/02/2040 | गुरु - चंद्र 09/02/2040 10/06/2041 |
| बुध 06/10/2033 केतु 23/11/2033 शुक्र 10/04/2034 सूर्य 21/05/2034 चंद्र 29/07/2034 मंगल 16/09/2034 राहु 18/01/2035 गुरु 08/05/2035 शनि 16/09/2035 | केतु 06/10/2035 शुक्र 02/12/2035 सूर्य 19/12/2035 चंद्र 17/01/2036 मंगल 05/02/2036 राहु 28/03/2036 गुरु 12/05/2036 शनि 05/07/2036 बुध 22/08/2036 | शुक्र 01/02/2037 सूर्य 21/03/2037 चंद्र 10/06/2037 मंगल 06/08/2037 राहु 30/12/2037 गुरु 09/05/2038 शनि 10/10/2038 बुध 25/02/2039 केतु 23/04/2039 | सूर्य 08/05/2039 चंद्र 01/06/2039 मंगल 18/06/2039 राहु 01/08/2039 गुरु 09/09/2039 शनि 25/10/2039 बुध 06/12/2039 केतु 23/12/2039 शुक्र 09/02/2040 | चंद्र 21/03/2040 मंगल 18/04/2040 राहु 01/07/2040 गुरु 03/09/2040 शनि 20/11/2040 बुध 28/01/2041 केतु 25/02/2041 शुक्र 17/05/2041 सूर्य 10/06/2041 |
| गुरु - मंगल 10/06/2041 17/05/2042 | गुरु - राहु 17/05/2042 10/10/2044 | शनि - शनि 10/10/2044 14/10/2047 | शनि - बुध 14/10/2047 23/06/2050 | शनि - केतु 23/06/2050 02/08/2051 |
| मंगल 30/06/2041 राहु 21/08/2041 गुरु 05/10/2041 शनि 28/11/2041 बुध 15/01/2042 केतु 04/02/2042 शुक्र 02/04/2042 सूर्य 19/04/2042 चंद्र 17/05/2042 | राहु 26/09/2042 गुरु 21/01/2043 शनि 09/06/2043 बुध 11/10/2043 केतु 01/12/2043 शुक्र 25/04/2044 सूर्य 08/06/2044 चंद्र 20/08/2044 मंगल 10/10/2044 | शनि 02/04/2045 बुध 05/09/2045 केतु 08/11/2045 शुक्र 10/05/2046 सूर्य 04/07/2046 चंद्र 03/10/2046 मंगल 06/12/2046 राहु 20/05/2047 गुरु 14/10/2047 | बुध 01/03/2048 केतु 27/04/2048 शुक्र 08/10/2048 सूर्य 26/11/2048 चंद्र 16/02/2049 मंगल 15/04/2049 राहु 09/09/2049 गुरु 18/01/2050 शनि 23/06/2050 | केतु 17/07/2050 शुक्र 22/09/2050 सूर्य 12/10/2050 चंद्र 15/11/2050 मंगल 09/12/2050 राहु 07/02/2051 गुरु 02/04/2051 शनि 05/06/2051 बुध 02/08/2051 |

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

| | |
|--------------|---------------------|
| मूलांक | 3 |
| भाग्यांक | 5 |
| मित्र अंक | 3, 5, 7, 9 |
| शत्रु अंक | 1, 4, 8 |
| शुभ वर्ष | 21,30,39,48,57 |
| शुभ दिन | बुध, शुक्र |
| शुभ ग्रह | बुध, शुक्र |
| मित्र राशि | वृश्चिक, मेष |
| मित्र लग्न | धनु, वृष, कर्क |
| अनुकूल देवता | सूर्य |
| शुभ रत्न | पन्ना |
| शुभ उपरत्न | संगपन्ना, मरगज |
| भाग्य रत्न | हीरा |
| शुभ धातु | कांसा |
| शुभ रंग | हरित |
| शुभ दिशा | उत्तर |
| शुभ समय | सूर्योदय के बाद |
| दान पदार्थ | हाथी दाँत, कपूर, फल |
| दान अन्न | मूँग |
| दान द्रव्य | घी |

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

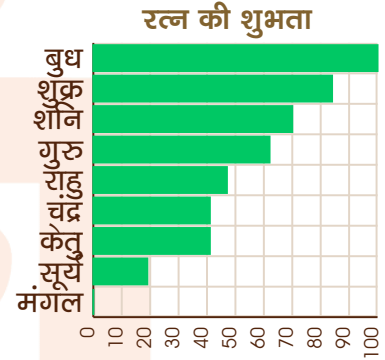
dadajijyotishkendra@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|----------|-------|-------|--|
| पन्ना | बुध | 100% | सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य |
| हीरा | शुक्र | 84% | पराक्रम, भाग्योदय, धन |
| नीलम | शनि | 70% | सुख, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति |
| पुखराज | गुरु | 62% | भाग्योदय, सुख, दम्पति |
| गोमेद | राहु | 47% | शत्रु व रोग, ग्रह कलेश |
| मोती | चंद्र | 41% | व्यय, हानि |
| लहसुनिया | केतु | 41% | व्यय, ग्रह कलेश |
| माणिक्य | सूर्य | 19% | ग्रह कलेश, व्यय |
| मूंगा | मंगल | 0% | दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना, पराक्रम हानि |



दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| सूर्य | 10/10/1993 | 44% | 52% | 0% | 100% | 69% | 72% | 58% | 22% | 16% |
| चंद्र | 11/10/2003 | 31% | 58% | 0% | 100% | 62% | 84% | 70% | 22% | 16% |
| मंगल | 10/10/2010 | 31% | 52% | 3% | 100% | 69% | 84% | 70% | 22% | 52% |
| राहु | 10/10/2028 | 0% | 16% | 0% | 100% | 62% | 91% | 77% | 61% | 16% |
| गुरु | 10/10/2044 | 31% | 52% | 0% | 100% | 75% | 72% | 70% | 47% | 41% |
| शनि | 11/10/2063 | 0% | 16% | 0% | 100% | 62% | 91% | 83% | 55% | 16% |
| बुध | 10/10/2080 | 31% | 16% | 0% | 100% | 62% | 91% | 70% | 47% | 41% |
| केतु | 11/10/2087 | 0% | 16% | 0% | 100% | 62% | 91% | 58% | 22% | 58% |
| शुक्र | 12/10/2107 | 0% | 16% | 0% | 100% | 62% | 97% | 77% | 55% | 52% |

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 | ----- |

द्वितीय चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 13/07/2034-27/08/2036 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 | ----- |

तृतीय चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 30/08/2068-04/11/2070 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076 | ----- |

शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार | फल | क्षेत्र |
|------------------------|------|--------------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | शुभ | दम्पति |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | सम | अल्प बचत |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | अशुभ | व्यय |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | सम | स्वास्थ्य |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | सम | पराक्रम हानि |

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्म दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृओं का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है । इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है । यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं ।

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गगत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढदेही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराकामी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

तृतीय भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, कलाकार, आलसी, कृपण, धनी, सुखी, पराकमी, भाग्यवान्, बहने भाईयों से अधिक एवं पर्यटनशील होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराकमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(10/10/2010 - 10/10/2028)

राहु की महादशा 10/10/2010 को आरम्भ और 10/10/2028 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु षष्ठम भावम में स्थित है। राहु की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य-समस्या, छोटी यात्रा तथा अचानक परिवर्तन ओर छोटे भाई-बहनों से लाभ मिला होगा। राहु की इस दशा में आपको विरोधियों पर विजय, नौकरी में लाभ और स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं होंगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु किसी अन्तर्दशा में स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप वातरोग, संक्रामक रोग, चर्मरोग, रक्त की समस्या, स्नायविक दुर्बलता आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आप जीवन में सन्तुलन अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द लेंगे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको शत्रु और विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ मिलेगा। सट्टे में भी लाभ हो सकता है। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। अदालती मामले मुकदमे में फैसला आपके हक में होगा। बारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप कुछ व्यय होगा। इसलिए उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान-उड्डयन, कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग, दवा, यातायात, ज्योतिष, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, ड्रग्स, एण्टीबायोटिक्स, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को लाभ, शत्रुओं पर विजय, सम्मान तथा सहयोगियों और वरिष्ठ कर्मचारियों का सद्भाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लाभ में वृद्धि और व्यापार का विस्तार होगा। आपके व्यवसाय और जीवन-वृत्ति में अच्छी प्रगति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आप अपने आवास में परिवर्तन कर सकते हैं। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप जमीन-जायदाद की खरीद-बिक्री करेंगे। इस दशा के दौरान और खासकर मंगल की अन्तर्दशा के दौरान अक्सर छोटी यात्राएं होंगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान दूर की यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। आप को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। विज्ञान, दवा, विमान इंजीनियरिंग और सभी

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

बौद्धिक-कार्यों में आपकी रुचि होगी। राहु शनि की राशि में स्थित है, इसलिए आप गम्भीर विषयों के अध्ययन में रुचि लेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा कुछ परिवर्तन होगा। उन्हें आपकी सहायता व मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी की अवांछित यात्रा, व्यय तथा कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको व्यवहार-कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी, संबंधियों से सहायता तथा सुख की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा जबकि आपके पिता का तीर्थाटन होगा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों का कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ तथा अप्रत्याशित विकास होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी विरोधियों पर विजय और मामूली स्वास्थ्य-समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद में वृद्धि, व्यापार में लाभ तथा शादी होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा किन्तु, कुछ बाधा आ सकती है। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सफलता ओर सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, सम्पत्ति तथा समृद्धि होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में व्यय तथा दूर की यात्रा होगी। चन्द्र के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा जबकि मंगल अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या ओर परिवर्तन होगा।

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य
(29/04/2025 - 24/03/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/10/2010 को प्रारंभ होकर 10/10/2028 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 29/04/2025 को प्रारंभ होकर 24/03/2026 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप चिंतित और अप्रसन्न रह सकते हैं; व्यर्थ इधर-उधर भटक सकते हैं। दर्शनशास्त्र और तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। राजनीति में सफलता मिलना कठिन होगा। जीवन से संबंधित पहेलियों को सुलझाने में और दार्शनिक चिंतन में समय बिताएंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

**अंतर्दशा :- राहु - चन्द्र
(24/03/2026 - 22/09/2027)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/10/2010 को प्रारंभ होकर 10/10/2028 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 24/03/2026 को प्रारंभ होकर 22/09/2027 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। चंद्रमा मन का कारक है। द्वादश भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी मानसिक दृढ़ता में कमी आ सकती है; अत्यधिक संवेदनशील हो सकते हैं। किसी कांड या धोखाधड़ी में फंस सकते हैं, जिस कारण धन खर्च हो सकता है। आपके व्यवहार के कारण बहुत से गुप्त शत्रु हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा का मंत्र पढ़ते हुए चंद्र को कच्चा दूध अर्पित करें।

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

**महादशा :- गुरु
(10/10/2028 - 10/10/2044)**

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा को 10/10/2028 आरम्भ और 10/10/2044 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु नवम् भाव में स्थित है तथा नवम् भाव विश्वास, भाग्य, अन्तर्ज्ञान, त्याग और दान, पिता, गुरु, दूर की यात्रा, उच्च शिक्षा तथा विदेश यात्रा का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है तथा जन्म कुण्डली में नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम, तृतीय एवं पंचम् भाव को देख रहा है और इन भावों पर अच्छा प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष का यह दशा काल आपके लिए बहुत अच्छा होगा।

स्वास्थ्य :

नवम् भाव में स्थित होकर प्रथम भाव पर गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप आप एक स्वस्थ जीवन व्यतीत करेंगे तथा दैनिक कार्य और उत्सव का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

व्यवसाय :

आपको नौकरी में पदोन्नति के अच्छे अवसर मिलेंगे जिससे आपकी आर्थिक तथा कार्यालयीय स्तर में वृद्धि होगी। व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में कुछ नवीन विचार आएंगे जिन्हें कार्यान्वित करने में आप सक्षम होंगे। आपको विदेश-गमन का अवसर मिलेगा और आप

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

वहाँ अच्छा धनोपार्जन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

गुरु पंचम भाव को देखते हुए नवम भाव में स्थित है जिससे आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण तथा आनंदमय होगा। आपके जीवन साथी पूर्ण सहयोग करेंगे और बच्चे आज्ञाकारी होंगे जिनसे आपको आनंद मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धार्मिक स्वभाव होने के कारण आप साहित्य तथा सहयोगी विषयों का अध्ययन जारी रखेंगे।



Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(10/10/2028 - 28/11/2030)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 10/10/2028 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 10/10/2028 को प्रारंभ होकर 28/11/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। सब कार्यों में सफलता मिलेगी। मानसिक क्षमता की वृद्धि होगी; सफलता के अवसर मिलेंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी ; शिक्षा पूर्ण होगी, रोजगार मिलेगा। तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। दान-धर्म में रुचि होगी। ध्यान, पूजा-पाठ आदि में समय व्यतीत कर सकते हैं। नये मित्र बनेंगे; सब कार्य पूर्ण होंगे।

आपके जीवनसाथी को कला में रुचि से लाभ होगा। आपके पिता सफल और धनी बनेंगे। माता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, हर प्रकार से धनार्जन और प्रभावशाली मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ हो सकता है; धनी और भाग्यशाली होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, प्रसिद्धि मिलेगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं; यात्राएं होंगी। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा ; लघु यात्राएं हो सकती हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(28/11/2030 - 10/06/2033)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 10/10/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 28/11/2030 को प्रारंभ होकर 10/06/2033 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपके पास आर्थिक संसाधन पर्याप्त होंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। शिक्षा उत्तम होगी। पारिवारिक जीवन में स्थायित्व आएगा। आपके कार्य की जनता द्वारा सराहना होगी। अदालत में जीत होगी। प्रत्येक कार्य जिम्मेदारी, दक्षता और सलीके से करेंगे। सफलता प्राप्त करने में थोड़ा संघर्ष करना पड़ेगा। ऐसे कार्य जिनमें लगन, परिश्रम और दक्षता की आवश्यकता हो, आपके लिए उपयुक्त रहेंगे।

आपके जीवनसाथी का उत्थान होगा। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता सफल रहेंगी; उनकी जिम्मेदारी बढ़ सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ,

Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com

सुख-सुविधाएं, उत्तम शिक्षा, शत्रुओं का मुकाबला करने की शक्ति का संकेत है।

आपकी संतान को सफल होने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और प्रसन्न होंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ होगा; आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारों से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती में मामूली संक्रमण हो सकता है; पेट में दर्द या अन्य तकलीफ से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए काले तिल, उड़द, चमड़ा और सरसों का तेल दान करें।



Shri Dadaji Jyotish Kendra

Shop No 05, Sanskrit Mahavidyalaya Parisar Itarsi

8871726789

dadajijyotishkendra@gmail.com